हालातों से जूझता किसान

प्रा.परमेश्वर माणिकराव वाकडे
एम.ए, एम.एड, हिंदी (सेट), शिक्षणशास्त्र (सेट),
एम.ए. इंग्रजी,
स.प्राध्यापक
डॉ.एस.एस.एम.प्रतिष्ठाण कॉलेज आफ एज्युकेशन, अहमदपुर

'कृषक' जिसे हम किसान और खेतिहर कहते हैं। भारत देश की 70% जनता गांव में रहती है और खेत जोतने का काम करती है। जिसे हम किसान कहते हैं। हमारे देश में किसान को 'राजा' कहा जाता है। इसलिए हमारा देश कृषि प्रधान देश कहलाया जाता है। प्राचीन काल से 'खेत' और 'किसान' को सबसे उंचा दर्जा दिया है। हमारे देश के करोडों की आबादी का पालन पोषण वहीं करता आया हैं। जब हम यह सब पढ़ते, सुनते है, तो प्रश्न खड़ा होता है। आज के समय में वाकई किसान राजा है? वह खुश हैं? भारतीय किसान गरीब है। किसान को दो वकत का खाना भी नसीभ नही हो पाता। वह अपने बच्चों को शिक्षा नहीं दे पाते। वह अपने बेटे और बेटियों का ठीक पोशाक नहीं कर पाते। वह अपनी पत्नी को गहने पहन्ने का सुख नही दे पाते। वह भी घर पर और क्षेत्र में काम करती है। किसान के पास उपयुक्त निवास करने के लिए घर नही होता। वह भूसे फूस की झोपड़ी में रहते है। उसके जीवन का सपना बस सपना ही रह जाता है, यह सपना वह कभी पुरा ही नही कर पाता। समय समय पर किसान लुटता आया है। सत्ता किसी की भी रही हो उसने लूटा है तो केवल किसानों को ही । राजा महाराजाओं ने, जमींदार, पटवारी, साहूकार, सरकारी नौकर, व्यापारी, दुकानदार यह सब अलग-अलग तरीके से किसान को लूटते आए हैं। वो प्रकृति से भी लड़ता है क्योंकि प्रकृति कभी भी उसके नियम से चलती नहीं है और सरकार के द्वारा बनाई गई तमाम व्यवस्थाएं जो उसके प्रतिकूल जा रही हैं, किसान को उससे भी लड़ना होता है।

आज भारतीय किसान अनेकों समस्याओं से लड़ रहा है। वह प्राकृतिक है, माननीय है और परिस्थिति ने बनाई हुई उसकी खुद की भी समस्याएं हैं। गांव में अनेकों समस्याएं हैं बिजली की समस्या, पानी की समस्या, आरोग्य की समस्या, शिक्षा, स्वच्छता की समस्याएं, रहन-सहन, पहनावा वह शहरी लोगों की जीवन चर्या से कोसों दूर है। जिसमें किसान जीता है।वह हर साल एक सपना लेकर अपनी खेती को जोतता है, खर्च करके वह खेती में बीज बोता है। पर उसका सारा सपना उस बारिश पर होता है, जो सही समय पर कभी बरसती नहीं दिन रात मेहनत करके जब यह फसल अच्छी आती है तो कभी-कभी उसका यह मुंह का निवाला नैसर्गिक आपदाओं के कारण उसके हाथोंसे निकल जाता है। कभी फसल हाथ में आए तो भी बाजार में उसे योग्य भाव नहीं मिलता। उसका सारा घर परिवार उस फसल पर निर्भर रहता है। फसल के चलते वह घर की जरूरतें पूरी करने के लिए कर्ज निकालता है।

समाज में रहते वह समाज की अनेकों रीति- रिवाज, परंपराओं से जुड़ा रहता है। उसे निभाने के लिए वह रात दिन मेहनत करता है। साथ में वह कुप्रथाओं कोभी निभाता है जिसमें वह ऋणी होता है। विवाह प्रथा एक इसका ही एक रूप, जिसमें दहेज प्रथा उसकी कमर तोड़ देती है। शिक्षा से वह कोसों दूर है। वह अच्छी शिक्षा न खुद पा सकता है ना बच्चों को दे सकता है। गांव में ऊंची शिक्षा न मिलने के कारण वह अपने बच्चों को शहरों में भेज नहीं सकता। उसका ऊंची शिक्षा का खर्चा वह दे नहीं पाता। अच्छी शिक्षा हासिल करने के बाद जो हासिल होता है उसे भी वह अपरिचित है। उस के नसीब में अच्छा लिखा ही नहीं है। शिक्षा के अभाव में वह अपने हक्क एवं अधिकारों से

दूर रहता है। सरकार द्वारा चलाई गई अनेकों योजनाओं से वह अपरिचित रहता है। वह उसका लाभ उठा नहीं पाता। शिक्षा की कमी होने के कारण वह अनेको अंधश्रद्धाओं कीचपेट में आ जाता है। अंधश्रद्धा की वजह से वह अनेकों कुरीतियां निभाता चलता है। और अपने स्वास्थ्य की ओर दुर्लक्षकरता है। किसान गांव में रहता है। गांव में स्वास्थ्य संबंधीसेवाओं की कमतरताएं है। किसान महिलाओं में स्वास्थ्य संबंधीअनेकों समस्याएं खून की कमी, निमोनिया जैसी बीमारियां, अस्पतालों की कमी की वजह से वह प्रसूति में अनेकों समस्याओं का सामना करती है। कम उम्र में ही अंधापन, चेहरे की झुरियां से वह बुढ्ढी दिखने लगती है।

कृषि कार्य में कई सारे खतरे होते हैं। इनमें खेती करने वाले किसानों को खेत में कई सारे खतरनाक जीव-जन्तुओं का सामना करना पड़ता है। खेत में काम करते समय बिच्छुओं, चीटियों, मधुमक्खियों आदि के काटने का बहुत बड़ा खतरा रहता है। किसानों को बहुत भारी और बड़े मशीनों के साथ काम करना पड़ता है, उनसे भी चोट लगने और मौत होने की भी संभावना रहती है।

भारतीय कृषि अभी बहुत कुछ पारम्परिक तौर-तरीकों पर ही निर्भर है। हालाँकि पारम्परिक तरीकों ने कृषि को चिंतामुक्तऔर टिकाऊ बना रखा था लेकिन छोटी होती जा रही जोत, आबादी की विस्मयकारी वृध्दि से उत्पन्न आवश्यकताऐं तथा समाज में बढ़ते धन के महत्त्व के कारण किसान भी अब पारम्परिक खेती के भरोसे नहीं रह सकता। इसी क्रम में यह कहा जा सकता है कि कृषि का आधुनिकीकरण भी पूर्णत: सरकार पर ही निर्भर करता है।

कृषि और किसान सरकार की प्राथमिकता में कभी रहा ही नहीं है, इसलिए आज तक कर्जमाफी जैसे शॉर्टकट से काम चलाया जा रहा है। किसानों की कर्ज माफी की बात को ज्यादा अहमियत नहीं दी जानी चाहिए। इसका बहुत महत्व नहीं सवाल उठता है कि इस वक्त क्या सबसे जरूरी है जिसकी तरफ सरकार का ध्यान नहीं जा रहा है। किसानों की जिंदगी सुधारनी हो या भारतीय कृषि की अवस्था सुधारनी हो, उसकी पहली और अनिवार्य शर्त है कि कर्ज की ये व्यवस्था तुरंत के तुरंत खत्म होनी चाहिए। कृषि का कोई न कोई ऐसा रूप किसानों को और समाज को उभारना होगा जिसमें कर्ज की जरूरत न पड़ती हो।

सरकार को ये कोशिश करनी पड़ेगी कि किसानों को उनकी उपज की सही कीमत मिले। एक तो यह है कि जो समर्थन मूल्य अनाजों का आप तय करते हैं, वो आप न तय करें और जगह-जगह किसानों की को-ऑपरेटिव को तय करने दें। दूसरा ये कि जो भी बाजार भाव तय होता है, उस भाव पर फसल बाजार में बिके। इसकी देखरेख की व्यवस्था सरकार करे। किसी किसान को बाजार तक पहुंचने में कोई वक्त ना लगे। किसानों को दलालों से मुक्ति मिले। कर्ज माफ करने के बजाय सरकार को चाहिये कि वो किसानों को मुफ्त में खाद, बीज और खेती में इस्तेमाल होने वाली जरूरी मशीनें मुहैया कराये। कृषि के रुप में बागवानी, मत्स्य पालन, पशुपालन, कुक्कुट पालन, मधुमक्खी पालन तथा फूड प्रोसेसिंग आदि अनेक कार्य शामिल हैं जिनसे न सिर्फ पारम्परिक कृषि पर बोझ कम होता है बल्कि वे उत्पादों में भिन्नता लाते हैं और कृषि का विकल्प भी बनते हैं।

कृषि को जब तक लाभकारी नहीं बनाया जाएगा और किसानों को उनकी कृषि योग्य जमीन पर खेती करने के बदले एक निश्चित आमदनी की गारन्टी नहीं दी जायेगी, जैसा कि अमेरिका सहित तमाम विकसित देशों में है, तब तक किसानों को खेती से बाँधकर या खेती की तरफ मोड़कर नहीं किया जा सकता। खेती से होने वाली आमदनी को बढ़ाने के प्रयास इस तरह किये जाने चाहिए कि किसान धीरे-धीरे सरकारी अनुदान से मुक्त होकर खेती पर निर्भर रह सकें। भारतीय कृषि सिर्फ खाद्यान्न उत्पादन योजना भर नहीं बल्कि एक समृध्द परम्परा रही है। आज भी देश के गाँवों में जाकर इस संस्कृति को देखा जा सकता है।

संदर्भ-

1. गिरीश मिश्र –'किसान और दुसरे संघर्षशील जन की आर्थिक दशा-दिशा' , "हंस पत्रिका–अगस्त 2006"
2. संजीव पाण्डेय– 'अन्न की बर्बादी और भूखी आबादी', "स्वतंत्र वार्ता–हैदराबाद",08/10/2016
3. विद्यार्थी चटर्जी– 'भूमि लूट के दौर में किसान' , "समयांतर पत्रिका" , नवम्बर 2016

4. https://hi.wikipedia.org'भारत में किसान आत्महत्या'
5. देविंदर शर्मा– 'क्या देश को खेती की जरूरत नहीं हैं?', हिंदी डेली नवभारत– 25 feb 2016
6. शाहिद ए चौधरी – 'गांवों और किसानों की बदहाली पर राष्ट्रपति की चिंता जायज', 'डेली हिंदी मिलाप– हैदराबाद' , १२ जनवरी २०१७